
आलस्य और अलबेलापन - 38

अव्यक्त बापदादा :-

➡ _ ➡ बापदादा आज यही रुह-रूहान कर रहे थे कि सभी बच्चे नॉलेज में तो बहुत होशियार हैं। प्वाइंट स्वरूप तो बन गये हैं लेकिन हर कमजोरी को जानने की प्वाइंट्स हैं, जानते भी है कि यह होना चाहिए, करना नहीं चाहिए यह जानते हुए भी प्वाइंट-स्वरूप बनना और जो कुछ व्यर्थ देखा-सुना और अपने से हुआ उसको फुलस्टॉप की प्वाइंट लगाना नहीं आता है। प्वाइंट्स तो हैं लेकिन प्वाइंट स्वरूप बनने के लिए विशेष क्या आवश्यकता है? अपने ऊपर रहम और, औरों को ऊपर रहमा भक्ति-मार्ग में भी सच्चे भक्त होंगे वा आप भी सच्चे भक्त बने हो, आत्मा में रिकॉर्ड भरा हुआ है ना तो सच्चे भक्त सदा रहमदिल होते हैं इसलिए वे पापकर्म से डरते हैं। बाप से नहीं डरते लेकिन पाप से डरते हैं। इसलिए कई पाप-कर्म से बचे हुए रहते हैं।

➡ _ ➡ तो ज्ञान-मार्ग में भी जो यथार्थ रहमदिल हैं - उसमें 3 बातों से किनारा करने की शक्ति होती है। जिसमें रहम नहीं होता वे समझते हुए जानते हुए तीन बातों के परवश बन जाते हैं। वह तीनों बातें हैं - अलबेलापन, ईष्या और घृणा कोई भी कमजोरी वा कमी का कारण 90 परसेन्ट यह तीनों बातें होती हैं। और जो रहमदिल होगा वह बाप के साथी धर्मराज की सजा से किनारा करने की शुभ-इच्छा रखते हैं। जैसे भक्त डर के मारे अलबेले नहीं होते, ऐसे ब्राह्मणआत्माए बाप के प्यार के कारण, धर्मराजपुरी से क्रास न करना पड़े - इस मीठे डर से अलबेले नहीं होते हैं।

➡ _ ➡ बाप का प्यार उससे किनारा करा देता है। अपने दिल का रहम अलबेलापन समाप्त कर देता है। और जब अपने प्रति रहम भावना आती है तो जैसी वृत्ति, जैसी स्मृति, वैसी सर्व ब्राह्मण सृष्टि के प्रति स्वतः ही रहमदिल बनते हैं। यह है - 'यथार्थ ज्ञानयुक्त रहम। बिना ज्ञान के रहम कभी नुकसान भी करता है। लेकिन ज्ञानयुक्त रहम कभी भी किसी आत्मा के प्रति ईष्या वा घृणा का भाव दिल में उत्पन्न करने नहीं देगा। ज्ञानयुक्त रहम के साथ-साथ स्वयं का रूहानियत का रूहाब भी अवश्य होता है। अकेला रहम नहीं होता। लेकिन रहम ओर रूहाब दोनों का बैलेंस रहता है। अगर ज्ञानयुक्त रहम नहीं है, साधारण रहम है तो किसी भी आत्मा के प्रति चाहे लगाव के रूप से, चाहे किसी भी कमजोरी से उसके ऊपर प्रभावित हो सकते हैं। प्रभावित भी नहीं होना है। न घृणा चाहिए, न प्रभावित चाहिए।

➡ _ ➡ क्योंकि आप तन-मन-बुद्धि सहित बाप के ऊपर प्रभावित हो चुके हो। जब मन और बुद्धि एक के तरफ और ऊंचे-ते-ऊंचे तरफ प्रभावित हो चुकी तो फिर दूसरे के ऊपर प्रभावित कैसे हो सकते? अगर दूसरे के ऊपर प्रभावित होते हैं तो उसको क्या कहेंगे? दी हुई वस्तु को फिर से स्वयं यूज करना उसको कहा जाता है - 'अमानत में ख्यानत'। जब मन-बुद्धि दे दिया तो फिर आपकी रही कहां जो प्रभावित होते हो? बाप के हवाले कर दिया है या आधी रखी है, आधी दी है? जिन्होंने फुल दी है वे हाथ उठाओ।

» _ » देखो, ब्राह्मण-जीवन का फाउण्डेशन महामंत्र क्या है?

‘मनमनाभव’। तो मनमनाभव नहीं हुए हो? तो ज्ञान सहित रहमदिल आत्मा कभी किसी के ऊपर चाहे गुणों के ऊपर, चाहे सेवा के ऊपर, चाहे किसी भी प्रकार के सहयोग प्राप्त होने के कारण आत्मा पर प्रभावित नहीं हो सकती। क्योंकि बेहद की वैरागी होने के कारण एक बाप, बाप के स्नेह, सहयोग, साथ - के सिवाए और कुछ उसको दिखाई नहीं देगा। बुद्धि में आयेगा ही नहीं। तुम्हीं से उठू, तुम्हीं से सोऊं, तुम्हीं से खाऊं, तुम्हीं से सेवा करूँ, तुम्हीं साथ कर्मयोगी बनूँ - यही स्मृति सदा उस आत्मा को रहती है।

» _ » भले कोई श्रेष्ठ आत्मा द्वारा सहयोग मिलता भी है लेकिन उसका भी दाता कौन? तो एक बाप की तरफ ही बुद्धि जायेगी ना। सहयोग लो, लेकिन दाता कौन है, यह भूलना नहीं चाहिए। श्रीमत एक बाप की है। कोई निमित्त आत्मा आपको बाप की श्रीमत की स्मृति दिलाती है तो उनकी श्रीमत नहीं कहेंगे, लेकिन बाप की श्रीमत को फॉलो कर औरों को भी फॉलो कराने के लिए स्मृति दिलाती है। निमित्त आत्माएं, श्रेष्ठ आत्माएं कभी यही नहीं कहेंगे कि मेरी मत पर चलो। मेरी मत ही श्रीमत है - यह नहीं कहेंगी। श्रीमत की फिर से स्मृति दिलाते, इसको कहते हैं यथार्थ सहयोग लेना और सहयोग देना।

» _ » दादी की, दादी की श्रीमत नहीं कहेंगे। निमित्त बनते हैं श्रीमत की शक्ति स्मृति दिलाते हैं। इसलिए कोई भी आत्मा के ऊपर प्रभावित नहीं होना। अगर किसी भी बात में किसी पर प्रभावित होते हैं, चाहे उसके नाम की महिमा पर, रूप पर वा किसी विशेषता पर तो लगाव के कारण, प्रभावित होने के कारण बुद्धि वहां अटक जायेगी। अगर बुद्धि अटक गई तो उड़ती कला हो नहीं सकती। अपने ऊपर भी प्रभावित होते हैं - मेरी बहुत अच्छी प्लैनिंग बुद्धि है मेरा ज्ञान बहुत स्पष्ट है मेरे जैसी सेवा और कोई कर नहीं सकते। मेरी इन्वेंटर बुद्धि है, गुणवान हूँ - यह अपने ऊपर भी प्रभावित नहीं होना है। विशेषता है, प्लैनिंग बुद्धि है लेकिन सेवा के निमित्त किसने बनाया?

» _ » मालूम था क्या कि सेवा क्या होती है। इसलिए स्व-उन्नित के लिए यथार्थ ज्ञानयुक्त रहमदिल बनना बहुत आवश्यक है। फिर यह ईष्या, घृणा समाप्त हो जाती है। तीव्रगति की कमी का मूल कारण यही है - ईष्या वा घृणा या प्रभावित होना चाहे अपने ऊपर चाहे दूसरे के ऊपर और चौथी बात सुनाई - अलबेलापन। यह तो होता ही है, टाइम पर तैयार हो जायेंगे, यह है अलबेलापन। बापदादा ने एक हंसी की बात पहले भी सुनाई है। ब्राह्मण-आत्माओं को दूर की नजर बड़ी तेज है। दूसरो की कमी पहले दिखाई देती है और अपनी कमी देरी से दिखाई देती है। (31.03.1990)

➤ रहम

» _ » रहम अर्थात् क्या ?

→ कृपा

→ करुणा

→ आशीर्वाद

→ दया

→ अनुकंपा

→ रहेमत

→ मर्सी

■ यह सब करने वाला केवल एक बाप ही है,

► धर्म का मूल दया ही है

»_» हमे सिर्फ औरो पर रहम नही करना है

→ स्वयं पर भी रहम करना है

■ संसार की आत्माओ के प्रति भी रहम करना है तो,

■ स्व उन्नति के लिये स्वयं पर भी रहम करना है

»_» भक्त जो होते है, वो पापो से बचे रहते है

→ क्युकी उन्हें भय रहता है

■ वो लोग बाप से नही डरते, पर पाप से डरते है

► इसलिये पाप कर्म से बचे हुये रहते है

»_» ज्ञान मार्ग में जो यथार्थ योगी है,

→ उनमें इन चार बातो से किनारा करने की शक्ति होती है

■ जिनमे रहम नही होता है, वह जानते हुये भी समझते हुये भी

इन चार बातो के वश हो जाते है

► अलबेलापन

► प्रभावित होना

► ईर्ष्या

► धृणा

➤➤ पॉइंट (बिंदी)

»_» सारे दिनभर जितने बिंदु लगाओगे उतनी कमाई होगी

→ विधि यही है,

■ बिंदु लगाओ कमाई जमा

»_» पॉइंट्स तो हमारे पास बहुत है

→ पर अब पॉइंट बनना है

➤➤ किन किन बातो में अहंकार नही आना चाहिये ?

»_» PLANNING बुद्धि

»_» मैं ही कर सकता हु

»_» ज्ञान बहुत स्पष्ट है

»_» गुणवान हु

»_» INVENTOR बुद्धि हु

»_» ALLROUNDER हु

➡ ➡ मेरा चिंतन अरछा है

➡ ➡ मैं बोलता बहुत अरछा हु

➡ ➡ मेरे में परखने की शक्ति बहुत है

➡ ➡ मेरा मनन बहुत अरछा है

➡ ➡ मैं मुरली बहुत अरछी सुनाता हु

➡ ➡ त्याग का अभिमान

➡ ➡ तपस्या का अभिमान

➡ ➡ ज्ञान का अभिमान

➡ ➡ भोजन का भी अभिमान

■ की हमने यह यह खाना छोड़ दिया है

➡ ➡ विशेषताओ का अभिमान

➡ ➡ मैं कौर्स अरछा कराता हु

➡ ➡ हमारी जान पहचान बहुत है

➡ ➡ हम बड़े मशहूर है

➡ ➡ मैं पुरुषार्थ बहुत अरछा करता हु

➤➤ बेहद का वैरागी

➡ ➡ राग और वैराग्य दोनों से परे जाना है

→ जो रागी है, वह उसका ही चिंतन करता रहता है

→ जो वैरागी है, वह उसने जो छोड़ा है, उसका चिंतन करता रहता है

■ वैराग्य राग का शीर्षासन है

■ दोनों ही एक दुसरे से बिल्कुल **OPPOSITE** है

▶ हमें इन दोनों से परे निकल जाना है

▶ और बेहद का वैरागी बनना है

➤➤ ईर्ष्या

➡ ➡ अगर कोई ज्ञान मार्ग में आगे बढ़ रहा है

→ और आप उससे ईर्ष्या कर रहे हो

■ तो वो सफलता आपके पास नहीं आयेगी

▶ क्यूकी आपने किसी की सफलता से ईर्ष्या की

▶ इसलिये वो सफलता फिर आपके पास भी नहीं आयेगी

➤➤ धृणा

➡ ➡ धृणा किसे कहेंगे ?

→ नफरत

→ DISLIKE

→ HATRED

→ SETTLED ANGER

■ धृणा एकदम से उत्पन्न नहीं होती है,

▶ लंबे समय से उसके प्रति अगर नेगेटिव भाव रखते हैं

▶ तब वह धृणा का रूप धारण करती है

▶ धृणा को निकालना बहुत कठिन है

▶ उसके लिये थोड़ा ज्यादा पुरुषार्थ करना पड़ेगा

▶ क्योंकि वह DEEP ROUTED है

»_» धृणा को कैसे निकालें ?

→ स्वमान से

→ योग से

→ ज्ञान की पॉइंट से

»» प्रभावित

»_» चाहे अपने ऊपर चाहे दूसरों के ऊपर प्रभावित नहीं होना है

→ किन् किन् बातों में अपने पर प्रभावित नहीं होना है

■ मेरी बहुत अच्छी प्लैनिंग बुद्धि है

■ मेरा ज्ञान बहुत स्पष्ट है

■ मेरे जैसी सेवा और कोई कर नहीं सकते

■ मेरी इन्वेंटर बुद्धि है

■ मैं गुणवान हूँ

▶ ज्ञान सहित रहमदिल आत्मा कभी किसी के ऊपर

▶ चाहे गुणों के ऊपर

▶ चाहे सेवा के ऊपर

▶ चाहे किसी भी प्रकार के सहयोग प्राप्त होने के कारण

▶ उसके नाम की महिमा पर

▶ रूप पर

▶ किसी विशेषता पर

▶ लगाव के कारण

▶ प्रभावित होने के कारण बुद्धि वहाँ अटक जायेगी

»_» जो बाप से प्रभावित होता है, वह और किसी भी आत्मा से

प्रभावित हो ही नहीं सकती है

»» अलबेलापन के रूप

»_» यह तो होता है

»_» टाइम पर तैयार हो जायेंगे

»_» पीछे कर लेंगे

»_» अभी तो टाइम पड़ा हुआ है
